



## Place of Biology in School Curriculum

वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में शिक्षा के विविध स्तर हैं - जैसे - प्राथमिक, निम्न माध्यमिक, उच्चतर माध्यमिक और उच्च स्तर। निम्न माध्यमिक स्तरों के पाठ्यक्रम में जीव विज्ञान का स्तर निम्न विवेचनाओं में दिया गया है।

**निम्न माध्यमिक स्तर (Lower Secondary Level)** - इस स्तर पर बालक का शारीरिक और भाग्यिक विकास तेजी से होता है। इस अवस्था में उनमें जीव आदतों का विकास हो जाता है। वे जीवों पर ध्यान देना शुरू करते हैं। अतः इस समय खेती आदतों का विकास करना चाहिए कि वे बच्चों के आधार पर वैज्ञानिक दृष्टि से विषय ले सकें। अतः इस स्तर के पाठ्यक्रम में विज्ञान को आकर्षक विषय के रूप में मौखिक, रसायन जीव विज्ञान एवं भू-विज्ञान को पढ़ाया जाना चाहिए।

**हाई स्कूल स्तर - कक्षा 9 तथा 10**

यह स्तर बालकों की किशोरावस्था का होता है। इस अवस्था में बालक में शारीरिक, भाग्यिक तथा संवेगात्मक परिवर्तन दिखाते लगते हैं। इस स्तर पर विज्ञान के बच्चों / व्यक्तियों का ज्ञान कारण तथा प्रभाव की कसौटी पर कसकर विज्ञान को आकर्षक विषय के रूप



में रखा गया है। इसमें दो वर्ग किये जाते हैं। एक कला वर्ग और दूसरा विज्ञान वर्ग। कला वर्ग के दाल में प्राथमिक विज्ञान का अध्ययन करेंगे और विज्ञान वर्ग के दाल उच्च विज्ञान का अध्ययन करेंगे। किन्तु वर्तमान में सभी वर्गों के लिए एक ही प्रकार का विज्ञान ही रखा है। जिसमें भौतिकी रसायन तथा जीव विज्ञान पढ़ाया जा रहा है।

माध्यमिक शिक्षा आयोग ने लिखा है

— "हार्ड स्कूल स्तर पर विज्ञान पाठ्यक्रम का पुर्नगठन होगा। भौतिकी, रसायन और जीव विज्ञान स्वतन्त्र विषय के रूप में पढ़ाये जायेंगे।

इस सम्बन्ध में शिक्षा आयोग ने लिखा है— "अतः हम संस्तरि करते हैं कि विद्यार्थी शिक्षा के प्रथम दस वर्ष में सामान्य शिक्षा के अंग के रूप में सभी दालों के लिए अभिवार्यता के आधार पर विज्ञान पढ़ाई जारी चाहिरु। इसके अतिरिक्त औसत योग्यता की अपेक्षा अधिक योग्यता वाले दालों के लिए माध्यमिक स्तर के उस विषय में विशिष्ट पाठ्यवस्तु के प्रावधान होणे चाहिरु।

अतः वर्तमान समय में विज्ञान के महत्त्व को देखते हुए प्रिन्स माध्यमिक और माध्यमिक स्तर के पाठ्यक्रम में विज्ञान की अभिवार्यता आवश्यक है।

प्राचार्य

मीरा मेमोरियल महाविद्यालय  
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान  
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

विद्यालय  
समाजसेवा समिति  
समाजसेवा समिति  
समाजसेवा समिति



⇒ Difference between curriculum and Syllabus → शिक्षक तथा शिक्षार्थी के लिए पाठ्यक्रम बहुत ही महत्वपूर्ण है। अध्यापक पाठ्यक्रम के आधार पर ज्ञान की शिक्षा देता है। Curriculum शब्द लैटिन भाषा के लिए आया है। कनिंघम के अनुसार - "पाठ्यक्रम शिक्षक के हाथ में एक साधन है जिसके द्वारा वह ज्ञान को अपने विद्यालय में अपने आदर्श के अनुसार बांटे हुए रूप देता है।" माध्यमिक शिक्षा आयोग ने लिखा है - "विद्यालय का सम्पूर्ण जीवन पाठ्यक्रम है जो ज्ञान के जीवन के सभी पक्षों को प्रभावित कर सकता है और इसके समुचित व्यापक विकास में सहायता दे सकता है।"

पाठ्यक्रम (Curriculum) इस शब्द का उपयोग अब व्यापक अर्थ में होने लगा है क्योंकि पाठ्यक्रम के अन्तर्गत वे सभी अनुभव आ जाते हैं जिन्हें ज्ञान विद्यार्थी जीवन में प्राप्त करता है और जिसमें कक्षा के अन्दर एवं बाहर आयोजित होने वाली पाठ्य तथा पाठ्य-हर क्रियाएँ सम्मिलित होती हैं। जैसा कि शिक्षा शब्द-कोश में लिखा है - पाठ्यक्रम विषयवस्तु (कोर्स) और क्रियोजित अनुभवों का समूह है, जिसे एक ज्ञान विद्यालय या महाविद्यालय के निर्देशक में प्राप्त करता है।



"Curriculum is a group of courses and planned experience which a student has under the guidance of the school or college"

पाठ्यवस्तु (Syllabus) पाठ्यवस्तु (सिरेबस) पूर्ण शैक्षिक सत्र में विभिन्न विषयों में शिक्षक द्वारा छात्रों को दिये जाते वाले ज्ञान की मात्रा के विषय में विशिष्ट जागरूकी प्रस्तुत करती है। शिक्षा शब्दकोश में पाठ्यवस्तु (Syllabus) के विषय में लिखा है - "पाठ्यवस्तु उद्देश्य की विषयवस्तु के मुख्य बिन्दुओं का कथन अथवा शैक्षिक रूप रेखा है।"

प्राचार्य

मीरा मेमोरियल महाविद्यालय  
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान  
पाण्डेयपुर, तारका, बलिया

हालात

महाविद्यालय का पीपलिया स्थित  
महाविद्यालय का पीपलिया स्थित  
महाविद्यालय का पीपलिया स्थित



## ⇒ PRINCIPLES OF CURRICULUM CONSTRUCTION

पाठ्यक्रम निर्माण के सिद्धांत -

पाठ्यक्रम निर्माण के विभिन्न सिद्धांत हैं जिनमें से मनुष्य को दृष्टिगत रखकर जैविक विज्ञान के पाठ्यक्रम की रचना की जानी चाहिए। जीव विज्ञान के पाठ्यक्रम के निर्माण में राचे के सिद्धांत को विशेष महत्व दिया जाता है क्योंकि बालक उन्हीं बातों तथा घटनाओं को पढ़ना तथा सीखना चाहते हैं जो उन्हें सचिकर लगता है। अतः इस सिद्धांत का अनुसरण करते हुए जैविक विज्ञान में सर्व सचिकर तथा जीवन से सम्बंधित विषयों को ही समाविष्ट करना चाहिए।

- ① **क्रियाशीलता एवं अनुभव का सिद्धांत**  
पाठ्यक्रम में थोड़े से शैक्षणिक प्रत्यय मात्र ही न करना बल्कि प्रत्यय ही जो छात्र स्वयं के अनुभव का समर्थन करके किसित करे। भूगोल विज्ञान में छात्रों की सक्रिय सीमा का समर्थन करता है। बालक अपने स्वभाव के अनुसार क्रियाशील होते हैं। बालक को इस प्रवृत्ति का अधिक से अधिक उपयोग करने के लिए जैविक विज्ञान के पाठ्यक्रम में ऐसे विषय वस्तु का चयन किया जाना चाहिए जिसमें बालक को क्रिया द्वारा सीखने के अधिक से अधिक विषय वस्तु की चयन किया जाना चाहिए जिसमें बालक को क्रिया द्वारा सीखने के अधिक अवसर प्राप्त हो सके इसके लिए जीव विज्ञान के पाठ्यक्रम में स्वनात्मक क्रियाएँ जैसे - मांस पित्त सेवचित बनाना आदि को विशेष स्थान दिया जाता है।

प्राचार्य

मीरा मेमोरियल महाविद्यालय  
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान  
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया



2- नम्यता परिवर्तनशीलता तथा विभिन्नता का सिद्धान्त → नम्यता का अर्थ पाठ्यक्रम में उच्च शिक्षणों के प्रावधान से है। जिसमें विभिन्न रुचियों के अनुसार बालक के अध्ययन की सुविधा हो। उसमें कठोरता न हो। इसके साथ-साथ पाठ्यक्रम में परिवर्तनशीलता होनी चाहिए। जैसे काल, आयु, परिस्थिति व आवश्यकता के अनुसार प्रयोग में लाया जा सके।

3- उपयोगिता का सिद्धान्त — जीविक विज्ञान का पाठ्यक्रम में उपयोगिता के सिद्धान्त की विशेष महत्व दिया जाता है। क्योंकि बालक जीवोपयोगी विषयवस्तु को ही पढ़ना चाहते हैं। पाठ्यक्रम की पढ़ाई वस्तु व्यापकता तथा सामाजिक दृष्टि से जीवन के उपयोग के लिए होनी चाहिए। उपयोगिता के अन्तर्गत जीविकोपार्जन भी आ जाता है।

4- जीवन से सम्बन्धित होना का सिद्धान्त — आज का विद्यार्थी समाज का द्रोण प्रतिरूप है। एवं आधुनिक जीवन का केन्द्र बिन्दु है। ऐसी दशा में यह महत्वपूर्ण है कि पाठ्यवस्तु समाज के वातावरण से अभिप्रेरित हो एवं पाठ्यक्रम, विद्यार्थी व समुदाय परस्पर सम्बन्धित हो।

5- सम-वय का सिद्धान्त — पाठ्यक्रम निर्माण में सम-वय के सिद्धान्त का भी ध्यान रखा जा चाहिए ताकि उसका विषय के अन्तर्गत

प्राचार्य



अन्य विषयों से सहसम्बन्ध स्थापित किया जा सके। वस्तुतः अब यह भाग जो वृत्त है कि पाठ्यवस्तु पृथक-पृथक बन्द कोठों में सम्भ्रान्त होकर परस्पर सम्बन्धित होगी चाहिए। विषय का दूसरे विषयों से सम्बन्ध रख अन्य शाखाओं में गिहित पाठ्य-वस्तुओं से दूसरे से परस्पर सम्बन्धित होगी चाहिए।

6- सुसंगठितता का सिद्धान्त - इस सिद्धान्त के अनुसार प्राथमिक माध्यमिक उच्च माध्यमिक एवं उच्च कक्षाओं की पाठ्य-सामग्री के मध्य सुसंगठितता प्रितरत होगी चाहिए। इसके मध्य कोई अन्तरथा व्यवधान नहीं होगा चाहिए।

7- वैयक्तिक विभिन्नताओं का सिद्धान्त - वर्तमान समय में पाठ्यक्रम के निर्माण में वैयक्तिकता के सिद्धान्त को भी ध्यान में रखा जाना है क्योंकि मनीषिज्ञान के यह सिद्ध कर दिया है कि बालकों में वैयक्तिक विभिन्नताएँ पायी जाती हैं। अतः वैयक्तिक विज्ञान की विषयवस्तु भी वैयक्तिक विभिन्नताओं के आधार पर ही संकलीत की जानी चाहिए। जिससे सभी बाल सम्पन्न रूप से ज्ञान आर्जन कर सकें।

प्राचार्य  
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय  
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान  
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया